Capital Formation And Economic Growth

पूंजी निर्माण आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है। परन्तु पूंजी निर्माण तभी होगा जब निवेश की मात्रा में वृद्धि होगी, निवेश की मात्रा में वृद्धि तभी होगी जब उपभोग को सीमित करके बचत की मात्रा को बढ़ायी जाए। केन्स ने इसे आय के सूत्र के द्वारा प्रदर्शित किया है

$$Y = C + S$$

$$\Delta Y = \Delta C + \Delta S$$

$$\therefore \Delta S = \Delta Y - \Delta C$$

यहाँ Y = आय, C = उपभोग, S = बचत

इस सूत्र से स्पष्ट है कि उपभोग में कमी करने पर ही बचत में वृद्धि होगी। और बचत में वृद्धि होने पर निवेश की मात्रा में वृद्धि होगी और निवेश में वृद्धि से पूंजी निर्माण दर तीव्र होगा। इसप्रकार बचत, पूंजी निर्माण तथा आर्थिक विकास के पारस्परिक संबंध को निम्नलिखित रूप में प्रदर्शित कर सकते है।

ΔS [बचत की मात्रा में वृद्धि] ⟶ ΔI [निवेश की मात्रा में वृद्धि] ⟶ ΔK [पूंजी निर्माण दर में वृद्धि] ⟶ ΔY [राष्ट्रीय आय में वृद्धि जो आर्थिक विकास का सूचक है]

पूंजी किसी अर्थव्यवस्था में दोहरी भूमिका अदा करती है एक भौतिक पूंजी अर्थात भौतिक पुनः निर्मित उत्पादन के साधनों के स्टॉक से है। यह स्टॉक नये प्लांट, नये मशीनरी उपकरणों आदि के रूप में होता है।

दूसरा मानवीय पूंजी के अन्तर्गत मनुष्य की उत्पादन क्षमता में वृद्धि सम्मिलित है जो शिक्षा, स्वास्थ्य, अन्वेषण आदि में किये गए पूंजी निवेश से प्राप्त होता है।

प्रो० साइमन कुजनेट्स (Simon Kuznet) के अनुसार "पूंजी निर्माण का अर्थ अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता में वृद्धि से है जो भौतिक पूंजीगत वस्तुओं एवं अभौतिक पूंजीगत वस्तुओं (मानवीय पूंजी) के सम्मिलित प्रयासों का

परिणाम है।"

इस प्रकार पूंजी निर्माण के अन्तर्गत निर्माण उपकरणों के नवीन वस्तुओं की खोजों में वृद्धि को ही नहीं शामिल करते बल्कि पूंजी निर्माण के लिए किए गए अन्य सभी कार्यों को भी सम्मिलित करते हैं जैसे शिक्षा, मनोरंजन एवं भौतिक सुविधाओं पर किए गए व्यय जिनसे व्यक्तिगत उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है। पूंजी निर्माण देश के उत्पादन तथा उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने के साधनों तथा शक्तियों को जुटाने का प्रयास है इससे उत्पादन सम्भावना वक्र (Production Possibility Curve (PPC)) ऊपर की ओर खिसक जाता है तथा देश में उत्पादन संभावनाएं बढ़ जाती हैं। इसे निम्नलिखित चित्रों से प्रदर्शित किया जा सकता है।

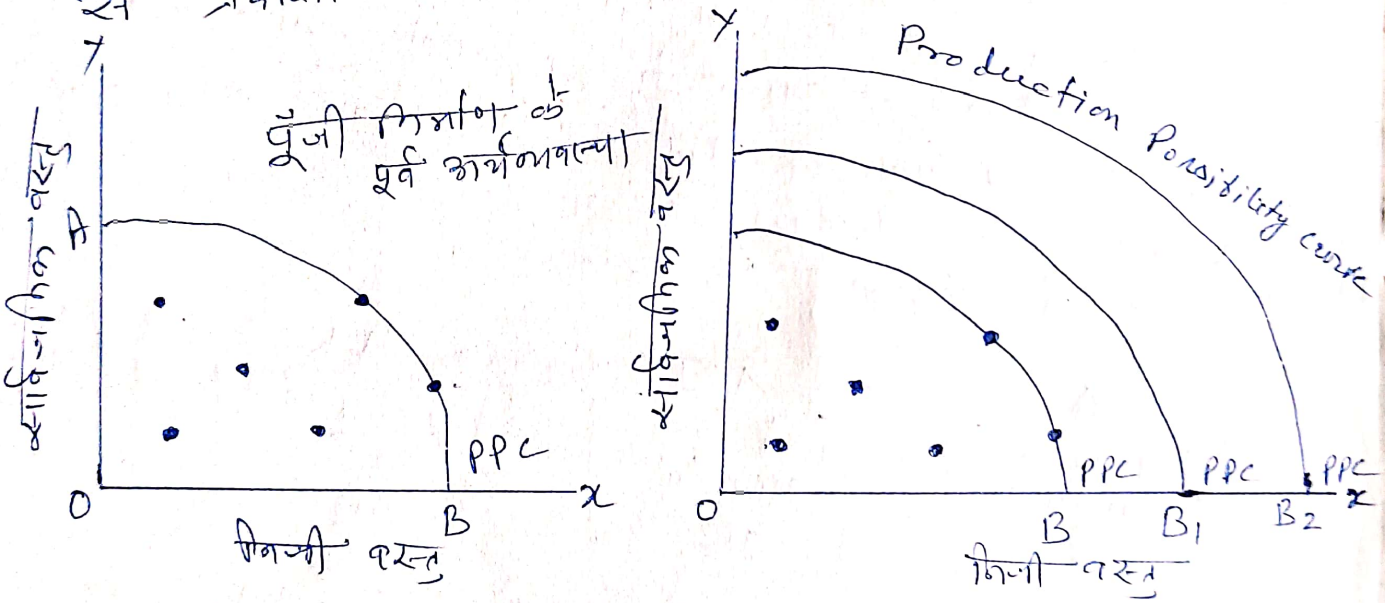

उपर्युक्त चित्रों से स्पष्ट है कि देश में पूंजी निर्माण की दर तीव्र रहने पर उत्पादन की सम्भावनाएं निजी एवं सार्वजनिक वस्तुएं दोनों की बढ़ जाती हैं। अगर देश में अपने निवेश में वृद्धि करे तो उत्पादन संभावनाएँ वास्तविक उत्पादन की मात्रा में परिवर्तित हो जायेगी और देश में आर्थिक विकास दर तीव्र हो जायेगा। उत्पादन एवं उपभोग संतुलन ऊँचे से ऊँचे स्तर पर प्राप्त हो सकेंगे। इसे चित्र द्वारा स्पष्ट किया

जा सकता है।

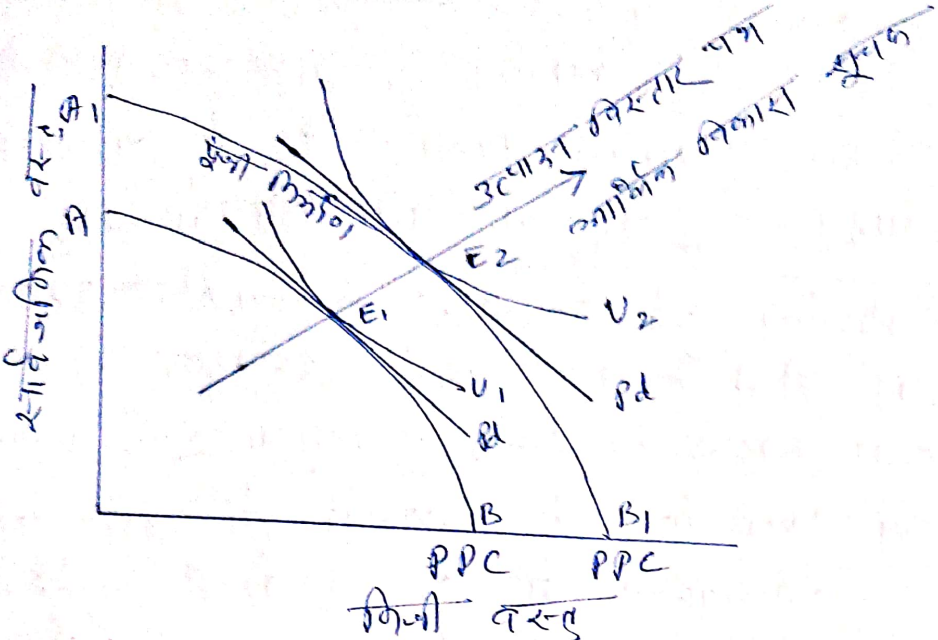

ऊपर के चित्र से स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था को आरंभ में E_1 बिन्दु पर उत्पादन एवं उपभोग संतुलन प्राप्त हो रहा है जो कि समाज का तटस्थता वक्र U_1 पर स्थित है। पूंजी निर्माण के बाद अर्थव्यवस्था का नवीन संतुलन नये उत्पादन सम्भावना वक्र तथा समाज के ऊँचे तटस्थता वक्र U_2 के E_2 बिन्दु पर प्राप्त हो रहा है इससे देश के निजी वस्तु एवं सार्वजनिक वस्तु की उत्पादन की मात्रा बढ़ जाती है जो आर्थिक विकास का सूचक है।

आर्थिक विकास में पूँजी निर्माण की भूमिका

आर्थिक विकास में पूंजी निर्माण कि महत्वपूर्ण भूमिका निम्नलिखित है —

1. राष्ट्रीय आय में वृद्धि -

राष्ट्रीय आय की मात्रा एवं दर में वृद्धि को ही आर्थिक विकास का सूचक माना जाता है। बचत में वृद्धि से पूंजी निर्माण में वृद्धि होती है। पूंजी निर्माण में वृद्धि से विनियोग में वृद्धि होती है जिससे लोगों को प्राप्त होनेवाले रोजगार में वृद्धि होती है। रोजगार में वृद्धि होने से लोगों की आय में वृद्धि होती है जिससे पहले से

और अधिक बचत एवं पूंजी निर्माण होने लगता है।
बचत एवं पूंजी निर्माण में वृद्धि से विनियोग, रोजगार,
आय तथा आर्थिक विकास दर में वृद्धि हो जाता है।

2. उत्पादन के चक्रीय विधियों में वृद्धि

पूंजी निर्माण से उत्पादन के चक्रीय उत्पादन विधियों में वृद्धि होती है तथा इससे उत्पादक संस्थाओं की उत्पादकता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त पूंजी निर्माण में वृद्धि से विनियोग के अवसरों में वृद्धि होती है, और संपूर्ण अर्थव्यवस्था में ही अपेक्षित गतिशीलता का संचार होने लगता है। जिससे राष्ट्रीय आय में वृद्धि के फलस्वरूप आर्थिक विकास की गति तीव्र हो जाती है।

3. प्राविधिक प्रगति (Technological Progress)

किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए प्राविधिक अथवा तकनीकी प्रगति का होना बहुत आवश्यक होता है जो पूंजी निर्माण के द्वारा ही संभव होता है इससे एक ओर जहां देश की प्राविधिक प्रगति होती है दूसरी ओर प्राकृतिक साधनों का अधिक उपयोग भी संभव हो जाता है। फलतः देश की आर्थिक प्रगति तेज हो जाती है।

4. मानवीय पूंजी में वृद्धि

शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि पर व्यय मानवीय पूंजी में विकास करते हैं। जो कि उत्पादन का सक्रिय साधन है। इसप्रकार के व्यय से पूंजी निर्माण पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है तथा देश का आर्थिक विकास दर तीव्र हो जाता है।

5. गरीबी के कुचक्र को तोड़ना

पूंजी निर्माण से अर्थव्यवस्था में विनियोग एवं आय में वृद्धि होती है। अर्द्धविकसित देश की गरीबी का कुचक्र तोड़ने का एक मात्र उपाय है अधिक मात्रा में विनियोग करना और यह तब तक संभव नहीं हो सकता

जब तक कि पूंजी निर्माण तीव्र दर से न हो। इसलिए आर्थिक विकास के लिए पूंजी निर्माण दर में वृद्धि आवश्यक है।

6. बाजार का विस्तार

पूंजी निर्माण से बाजार का विस्तार होता है और गुणक - त्वरक - अन्तक्रिया द्वारा आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

7. भुगतान शेष की समस्या का अन्त

अल्प विकसित देश प्रायः प्राथमिक वस्तुओं जैसे खनिज पदार्थ, कृषि वस्तुएं आदि का निर्यात करते है और निर्मित व अर्द्धनिर्मित उपभोक्ता पूंजीगत वस्तुओं का आयात करते है। इससे इनका भुगतान शेष सदैव प्रतिकूल बना रहता है। लेकिन पूंजी निर्माण के द्वारा इस समस्या का अन्त हो जाता है।

पूंजी निर्माण में कठिनाईयाँ

1. जनसंख्या में तीव्र वृद्धि

जनसंख्या में वृद्धि के कारण उपभोग प्रवृति बहुत तीव्र हो जाती है तथा बचत की संभावनाएँ कम से कम हो जाती है जिससे पूंजी निर्माण में कठिनाईयाँ होती है।

2. असंतुलित विकास

अर्द्धविकसित देशों में उत्पादन का उद्देश्य सामाजिक लाभ नहीं होकर व्यक्तिगत लाभ अधिक रहता है जिससे अर्थव्यवस्था में असंतुलित विकास हो जाता है फलस्वरूप अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग तथा एक दूसरे के पूरक के रूप में काम करने का अभाव होता है। जिससे अर्थव्यवस्था में उत्पादन वृद्धि होने में कठिनाईयाँ उत्पन्न हो जाती है।

Dr Sandhya Rani
Dept of Economics
Maharaja College

Scanned with OKEN Scanner